प्लैटफॉर्म टिकट बेचना बंद करना कोई उपाय नहीं है

- विनीत नारायण

छुट्टियों और शादी-ब्याह के मौसम में जब ट्रेन से लोगों की आवाजाही ज्यादा होती है तो प्लैटफॉर्म पर भीड़ कम करने के नाम पर रेलवे प्लैटफॉर्म टिकट बेचना बंद कर देता है। यह वैसे ही हुआ कि ट्रेन में भीड़ बढ़ जाती है तो ट्रेन चलाई ही न जाए। होना या चाहिए कि भीड़ बढ़ने के कारण दूर किए जाएं और यात्रियों की सुविधाओं का बंदोबस्त किया जाए। सब जानते हैं कि ट्रेन के मुकाबले हवाई जहाज से यात्रा करने जाने वालों को छोड़ने और रिसीव करने वालों की संख्या कम होती है और इसका कारण भी स्पष्ट है।

प्लैटफॉर्म पर भीड़ बढ़ने के कारण हो सकने वाले हादसों का ख्याल रखते हुए भीड़ कम करने की कोशिश तो सराहनीय है पर आंख मूंद कर प्लैटफॉर्म टिकट बेचना बंद करना समस्या का हल नहीं है। वैसे भी, प्लैटफॉर्म पर घूमने का शौक रखने वाले लोग प्लैटफॉर्म टिकट लेकर तो नहीं ही प्लैटफॉर्म पर जाते हैं। टिकट लेकर आम मध्यमवर्गीय, पढ़े-लिखे, समझदार, नियमों का पालन करने वाले और जरूरतमंद लोग ही प्लैटफॉर्म पर जाते हैं। प्लैटफॉर्म टिकट बेचना बंद करके आप ऐसे लोगों को बिना टिकट प्लैटफॉर्म पर जाने के लिए मजबूर करते हैं। जो लोग ऐसा नहीं करना चाहते वे आस-पास के स्टेशन का टिकट ले लेते हैं और इस चक्कर में काउंटर बाबू कम पढ़े-लिखे अनजान लोगों को यह कहकर टरका देते हैं इन स्टेशनों का टिकट नहीं मिलता। ऐसे में दिल्ली से गाजियाबाद, फरीदाबाद और पलवल आदि जगह ट्रेन से जाने वाले यात्रियों को दूसरी समस्या का सामना करना पड़ता है।

कहने के लिए, कहा जा सकता है कि बुजुर्गों और बच्चों के साथ अकेले यात्रा करने वाली महिलाओं के मामले में " क्या मैं सहायता कर सकता हूं " काउंटर से प्लैटफॉर्म टिकट लिए जा सकते हैं। पर सच यह है कि बच्चे के साथ अकेली यात्रा करने वाली कोई पढ़ी-लिखी और समझदार महिला भले ही स्वयं ट्रेन में सवार हो जाएं कई अनपढ़, अक्षम और लाचार पुरुष जो वरिष्ठ नागरिक नहीं हैं - के लिए यह बिल्कुल संभव नहीं है। ऐसे लोगों के लिए आरक्षण चार्ट में अपना नाम ढूंढ़ना और सारे सामानों के साथ सकुशल अपनी सीट तक पहुंच जाना साधारण काम नहीं है। दूसरी ओर, आने वाले यात्रियों को प्लैटफॉर्म पर लेने जाने के लिए " क्या मैं सहायता कर सकता हूं " काउंटर से भी प्लैटफॉर्म टिकट नहीं मिलता है।

पहले उन कारणों पर विचार करते हैं जिनकी वजह से रेल यात्रियों को छोड़ने जाना जरूरी होता है। और इसमें सबसे पहला कारण है भीड़। इसकी वजह से सामान्य सक्षम आदमी भी कब कहां गिर जाए और उसे किसी के सहारे की जरूरत पड़ जाए कहा नहीं जा सकता। इस संबंध में हाल में नई दिल्ली स्टेशन पर पत्रकार जयंत कुमार रथ की रहस्यमयी मौत का मामला उल्लेखनीय है। जयंत की मौत के कारणों का पता अभी नहीं चला है पर यह तो स्पष्ट है कि उसकी मौत पटरी पर किसी ट्रेन की चपेट में आने से ही हुई है। कोई पढ़ा-लिखा समझदार व्यक्ति जो आरक्षण करवाकर ट्रेन में सवार होने गया था, सामान्य स्थितियों में खुद तो पटरी पर नहीं ही जाएगा। मुमकिन है वह भीड़ के कारण दूसरी ओर से ट्रेन में चढ़ने का प्रयास करते हुए किसी अन्य ट्रेन की चपेट में आ गया हो।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली से चलने वाली ज्यादातर ट्रेन के स्लीपर क्लास में आरक्षण होने के बावजूद चढ़ना बहुत मुश्किल काम है। जनरल बोगी में तो आजकल लाइन लगती है पर स्लीपर

क्लास का बुरा हाल है। आम यात्री बताते हैं कि जनरल बोगी में लाइन इसलिए नहीं लगती कि वहां तैनात रेल पुलिस वालों को अपनी जिम्मेदारी का ख्याल आ गया है। लोगों की आम शिकायत होती है कि वे पैसे लेकर सीट मुहैया कराते हैं। इस तरह आरक्षित टिकट होने और न होने दोनों स्थिति में आपके साथ जितने लोग होंगे आपको सीट पाने में उतनी ही सुविधा होगी - यह रेलवे स्टेशन का अघोषित नियम है।

मान लीजिए आप उच्च श्रेणी में यात्रा करते हैं। राजधानी, शताब्दी जैसी ट्रेन की बात छोड़ दें तो उच्च श्रेणी की आपकी बोगी उसी प्लैटफॉर्म पर होगी जिसमें जनरल क्लास और स्लीपर के यात्री इंतजार करते हैं। ऐसे में आपका अपने सभी सामानों के साथ अपनी बोगी तक पहुंचना काफी मुश्किल काम है। कई बार व्हीलचेयर और स्ट्रेचर के मरीज भी भीड़ में फंस जाते हैं। इसलिए जरूरी है कि प्लैटफॉर्म पर भीड़ कम हो। हम यह मानकर चलें कि प्लैटफॉर्म पर यात्रियों के अलावा उन्हें छोड़ने-लेने वाले ही जाते हैं। यात्रियों की तरफ से सोचे तो छोड़ने - लेने जाना इसलिए भी जरूरी होता है कि कुली मनमाना पैसा मांगते हैं और अक्षम यात्रियों के मुकाबले सामान लेकर भी वे इतनी तेजी से चलते हैं कि एक स्वस्थ व सक्षम आदमी कुली के साथ चलने के लिए चाहिए होता है।

वैसे तो कुलियों का नंबर होता है और किसी का सामान लेकर कुली गायब हो जाए तो कहा जाता है कि उसे ढूंढ़ा जा सकता है। इसीलिए हमलोगों को बचपन से यह बताया गया है कि लाल वर्दी वाले लाइसेंसधारी कुलियों की ही सेवा लेनी चाहिए। पर ऐसे सभी कुली अपना बिल्ला इस तरह बांधते हैं कि उनका नंबर नहीं पढ़ा जा सकता है। क्यों नहीं कुलियों का बिल्ला सीने पर इस तरह टांगा जाए कि नंबर स्पष्ट पढ़े जा सकें और लोग उन्हें विश्वास के साथ सामान दे सकें। इस व्यवस्था को लागू करना कोई मुश्किल काम नहीं है पर हो जाए तो हजारों रेल यात्रियों को आराम होगा।

प्लैटफॉर्म पर अगर सिर्फ आने-जाने वाली ट्रेन के यात्री और उन्हें छोड़ने व रिसीव करने वाले ही रहें तो ज्यादा भीड़ नहीं होगी। पर नए, कम जानकार, ज्यादा सामान लेकर यात्रा करने वाले और ऐसे ही कई दूसरे वर्ग के यात्री अगली ट्रेन पकड़ने के लिए प्लैटफॉर्म पर ही इंतजार करते हैं। दिल्ली जैसे बड़े शहर में दूर-दूर से स्टेशन आने वाले कई लोग पहले ही पहुंच जाते हैं और वे भी प्लैटफॉर्म पर ही रहते हैं। फोन पर ट्रेन के आने का समय अक्सर सही नहीं बताए जाने के कारण भी लोगों को लेट चल रही ट्रेन का इंतजार प्लैटफॉर्म पर ही करना पड़ता है। लेने आना वाला देरे से पहुंचे तो भी उसका इंतजार लोग प्लैटफॉर्म पर ही करते हैं। स्टेशन के बाहर, पार्किंग या टैक्सी / ऑटो स्टैंड के पास ऐसी कोई जगह हो जहां यात्री और लेने आने वाले मिल सकें तब भी प्लैटफॉर्म पर जाने की जरूरत कम होगी।

होना यह चाहिए कि प्लैटफॉर्म पर उसी को जाने दिया जाए जिसकी ट्रेन आने वाली है। प्लैटफॉर्म पर होने वाली घोषणा स्टेशन के बाहर भी सुनाई पड़े तो लोग-बाग बाहर भी इंतजार कर सकेंगे। रेलवे प्लैटफॉर्म हवाई अड्डे नहीं हो सकते। पर रेलवे स्टेशन पर कुछ सुविधाएं शुरू कर दी जाएं तो यात्रियों को काफी आराम हो जाएगा। अगर कुछ स्वयंसेवक हों जो स्टेशन पहुंचने वाले यात्रियों को ट्रेन में पहुंचने में सहायता दें, वाजिब पैसे में कुली ठीक कर दें (भले ही सेवा शुल्क लेकर पर ठगी की संभावना न रहे) तो लोगों को सहूलियत होगी। इस तरह और भी कई उपाय किए जा सकते हैं। प्लैटफॉर्म टिकट नहीं बेचकर रेलवे कायदे-कानून का पालन करने वालों को गलत करने के लिए मजबूर कर रहा है। और कुछ नहीं।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं देखें – www.vineetnarain.net